ISSN 2278 - 0327

कुमाऊँ के लोक-गाथाओं में 'जागर गायन' का सांगीतिक विवेचन

जगमोहन परगाँई
संगीत, शोध छात्र,
कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखण्ड

उत्तराखंड प्रदेश असंख्य लोक देवी-देवताओं की आराधना स्थली मानी गई है इस कारण इसको देवभूमि के नाम से भी जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि यहां के कण-कण में देवी देवता निवास करते हैं।

कुमाऊँ मण्डल भारत के उत्तराखण्ड राज्य के दो प्रमुख मण्डलों में से एक है। वहीं दूसरा मण्डल है गढ़वाल। कुमाऊँ मण्डल में अल्मोड़ा, बागेश्वर, चंपावत, नैनीताल, पिथौरागढ़, उधमसिंह नगर जिले आते हैं। कुमाऊँ के उत्तर में तिब्बत, पूर्व में नेपाल, दक्षिण में उत्तर प्रदेश तथा पश्चिम में गढ़वाल मंडल हैं। कुमाऊँ के मुख्य नगर हल्द्वानी, नैनीताल, अल्मोड़ा, रानीखेत, पिथौरागढ़, रुद्रपुर, काशीपुर, पंतनगर तथा मुक्तेश्वर हैं। कुमाऊँ मण्डल में ही उत्तराखण्ड का उच्च न्यायालय भी स्थित है।

सभी हिंदू देवी-देवताओं की आराधना के साथ-साथ यहाँ पर स्थानीय रूप से पूजे जाने वाले कई देवी-देवताओं का भी यहाँ की संस्कृति में महत्त्वपूर्ण स्थान है। यहाँ की पृष्ठभूमि जिन स्थानीय देवी-देवताओं से निर्मित हुई है उन्हें कुल देवता, ईष्ट देवता, ग्राम देवता कहा जाता है। इन पर यहाँ के जनमानस का अटूट विश्वास व अपार आस्था परिलक्षित होती है। ये देवी-देवता जहाँ अन्याय से क्रोधित होने पर अनेक प्रकार की पीड़ाओं, दु:खों, संकटों तथा विपत्तियों को जन्म देने की सामर्थ्य रखते हैं वहीं दूसरी ओर प्रायश्चित व नियमित पूजा-अनुष्ठान के द्वारा प्रसन्न किए जाने पर सब प्रकार की समृद्धि एवं सुख प्रदान कर देते हैं। अत: यहाँ जागर गाथाओं को संगीत (लोक धुनों) के माध्यम से देवी-देवताओं का आह्वान/अवतरण करने के लिए 'जागर' लगाने की प्रथा है। एक धार्मिक अनुष्ठान के साथ-साथ जागर एक समृद्ध संगीत विधा भी है। जागर द्वारा अनिष्ट से रक्षा, रोग-व्याधि से मुक्ति एवं सुख-शांति हेतु अनेक प्रकार की गीत, गाथाएँ गाई जाती हैं।

जागर-शाब्दिक अर्थ, स्वरूप एवं सम्पादन, प्रकार और प्रक्रिया

शाब्दिक अर्थ - ''जागर'' शब्द संस्कृत का है। जिसका शाब्दिक अर्थ है- जागना या जगाना। जागर में जगरिया (गाथागायक) देवता का अवतरण करता है, इसलिए उद्बोधन या चेतन कराने के अर्थ में भी जागर शब्द अर्थसंगत प्रतीत होता है। इस प्रकार ''जागर'' जागरण और उद्बोधन दोनों अर्थों की प्रतीति कराता है। देवी-देवताओं को प्रसन्न करने या प्रेतबाधा निवारण हेतु रात्रि जागरण करके जो गाथाएँ गाई जाती हैं और जिनके गाने से देव विशेष चेतन होता है, उन्हें जागर कहते हैं।''(पोखरिया, 1994, पृ0 63)[1]

जागर से अभिप्राय केवल जागने से ना होकर देवता की आत्मा को जागृत करने तथा उसे किसी व्यक्ति में अवतरित कराने से है। इस कार्य के लिये जगरिया जागर लगाता है तथा देवता के आह्वान हेतु देवता की जीवनी और उसके द्वारा किये कार्यों का बखान अपने साथी गाजे-बाजे वालों के साथ गाते हुये करता है। जागर में वाद्य यंत्रों के रूप में हमारे लोक वाद्य हुड़का और कांसे की थाली का प्रमुख रूप से प्रयोग किया जाता है। इन गीतों को जागर कहने का तर्क यह है कि इनमें देवी शक्ति को जाग्रत करने का आह्वान होता है, इसलिये इनका प्रारंभ जागने-जगाने के उद्बोधन से होता है

जागर एक पवित्र अनुष्ठान है, जिसमें यह माना जाता है कि देवताओं की आत्मा मनुष्य के शरीर में कुछ अवधि के लिए आकर आयोजनकर्ता के परिवार को आशीर्वाद प्रदान करती है। इसके आयोजन में साफसफाई, सुचिता और पवित्रता का विशेष ध्यान रखा जाता है। किसी भी प्रकार की त्रुटि होने या सुचिता का ध्यान न रखे जाने पर देवता के कोप का भागी होना पड़ सकता है।

प्राय: जागर नृत्यमयी उपासना के साथ देवता या अनिष्टकारिणी शक्ति की मनौती के लिए आयोजित किए जाती हैं।

जागर: प्रकार और प्रक्रिया

विषय वस्तु के आधार पर जागर में तीन भदे किये जा सकते हैं।

1. भतू-प्रेत सम्बन्धी जागर

2. देवी देवताओं सम्बन्धी जागर
3. स्थानीय राजवंशों सम्बन्धी जागर

1. भूत-प्रेत सम्बन्धी जागर - इसमें किसी व्यक्ति विशेष के शरीर में भूत या देवता का अवतरण होता है वह अपने अल्प मृत्यु के बारे में या अपनी भटकती आत्मा की शान्ति हतु सम्बन्धित व्यक्तियों को अपनी इच्छा बताता है और उसी अनुसार उसकी इच्छा पूर्ति कर उसको पुरखों के पास भेज दिया जाता है। (पोखरिया, 1994, पृ0 68)[2] अर्थात् उसकी अन्तिम क्रिया-कर्म भी किये जाते हैं।

2. देवी-देवताओं सम्बन्धी जागर- इसमें देवी-देवताओं सम्बन्धी जागर होते हैं। पहला सार्वभौमिक देवी-देवता जैसे नृसिंह, हनुमान, पांडवगाथा, शिव पुराण, रामायण, देवी काली आदि। दूसरे स्थानीय देवता जैसे ग्वल, गगंनाथ, भोलानाथ, हरू, सैंम, गढ़देवी आदि और जंगली देवताओं में रमौल, ऐड़ी, परी, आचंरी, छुरमल, चौमू, बौधाण आदि आते हैं। इनके जागरों में नृत्य करने वालों में महिला, पुरुष भी हो सकते हैं।

3. स्थानीय राजवंशों सम्बन्धी जागर- इस जागर में स्थानीय शासकों के जागर जैसे- कत्यूरी, चन्द आदि स्थानीय राजवंशों की गाथायें। (पोखरिया, 1994, पृ0 69)[3]

कुमाऊँ जागर का आयाजेन दो रूपों में किया जाता है-

1. बाहरी जागर, 2. भीतरी जागर।

1. बाहरी जागर- इस जागर का स्वरूप अधिक विस्तृत होता है। इसमें डँगरियों की संख्या अधिक होती है तथा इसकी कालावधि भी अधिक होती है। यह जागर दो दिन दो रात से लेकर बाईस दिन और बाईस रात तक चलता है। इस जागर के लिए नियत तिथि पर जागर गान करने वाले जगरियों तथा देवता का अवतरण करने वाले धामियों, पस्वा, डँगरियों को आमंत्रित किया जाता है तथा इससी सूचना क्षेत्र के अन्य लोगों को भी दी जाती है।

बाहरी जागर -

जागर के लिये धूणी:- जागर के लिए नियत स्थान पर एक धूनी (आग का कुण्ड) जलाई जाती है, तथा प्रतिदनि प्रात: सायं धूपबत्ती जलाकर इसकी आराधना की जाती है। धूनी के एक ओर देवता के डँगरिये के लिए एक कम्बल का आसन लगाया जाता है। तथा उसके दूसरी और दास (वाद्यवादकों) व गाथा गायकों के लिए एक स्थान नियत होता है। अन्य क्षेत्रीय लोग भी उपलब्ध स्थान पर बैठ जाते हैं। बाहरी जागर के लिए ढाले तथा नगारा, हड्डुका को गाथा गायकों तथा वादकों द्वारा प्रयोग किये जाते हैं।

धूनी (आग का कुण्ड)

2. भीतरी जागर - इस जागर का स्वरूप बाहरी जागर की भांति अधिक विस्तृत नहीं होती है छोटी होती है। भीतरी जागर की अवधि विषम दिन संख्या (3,5,7,9,11) के रूप में अधिक से अधिक ग्यारह दिन की होती है। इसे भ्वलनाथज्यू (भोलेनाथ) का जागर भी कहा जाता है। इस जागर में वाद्यवादक ही गाथागायक होते हैं तथा कासें की थाली अथवा हुड़का (डमरू) वाद्यों का प्रयोग होता है। कुमाऊँ में मुख्य रूप से ग्वल, गगंनाथ, गारेखनाथ, हरूल, सैम, ऐड़ी, कलविष्ट व अनेक देवियों के जागर लगाए जाते हैं।

भीतरी जागर में जागर गाते हुए

जागर की लय तथा उनके गायन में प्रयुक्त होने वाले जागर वाद्यप्रयोगों के आधार पर जागरों को चार रूपों में विभक्त किया जाता है।

1. हुड़किया जागर, हुड़के में गाया जाने वाला गद्यात्मक शैली का जागर है- इसे 'ख्याला' भी कहते हैं।
2. डमरिया (डमरूवा) जागर, इसे डमरू में गाया जाता है।
3. गड़ेली जागर, केवल थाली बजाकर गाया जाता है।
4. मरुयों जागर, झाझं, मृदंग के साथ गाया जाता है

जागर में मुख्य लोक गायक 'जगरिया' के साथ दो या दो से अधिक 'भगार' या 'ह्योवार' सहगायक होते हैं। कुमाऊँ में जागरगाथा दो-दो व्यक्तियों के दलों में विभक्त होकर 'फाग' के रूप में गायी जाती है जिसमें एक दल 'फगार' तथा दूसरा 'भगार' (जागर में जागर गाथा को गाने वाले प्रमुख गायक के साथ गाने वाले सहगायकों को 'भगार' या 'ह्योवार' कहा जाता है) कहलाता है।

जागर में देवी देवताओं से सम्बन्धित जागारों का गान करने वाले तथा करवाने वाले चार प्रमुख व्यक्तियों का जागर में उनकी भूमिका का परिचय देना आवश्यक होगा। जागर के संचालन में मुख्य रूप से निम्न लोग शामिल होते है -

1- जगरिया या धौंसिया
2- डंगरिया
3- स्योंकार-स्योंने या सोंकार
4- गाजेबाजे वाले- जो जगरिया के साथ गायन में तथा वाद्ययंत्रों के संगीत से सहयोग करते हैं।

जगरिया या धौंसिया-

जगरिया या धौंसिया उस व्यक्ति को कहा जाता है जो अदृश्य आत्मा को जागृत करता है, इसका कार्य देवता की जीवनी, उसके जीवन की प्रमुख घटनायें व उसके प्रमुख मानवीय गुणों को लोक वाद्य के साथ एक विशेष शैली में गाकर देवता को जागृत कर उसका अवतरण डंगरिया से शरीर में कराना होता है।

डंगरिया, पश्वा या धामी-

डंगरिया वह व्यक्ति होता है, जिसके शरीर में देवता का अवतरण होता है, इसे डगर (रास्ता) बताने वाला एवं सभी दु:खी लोगों की समस्याओं के समाधान करने वाला माना जाता है, इसलिये इसे डंगरिया कहा जाता है।

स्योंकार-स्योंनाई-

जिस घर में या घर के लोगों द्वारा जागर आयोजित की जाती है, उस घर के मुखिया को स्योंकार या सोन्कार और उसकी पत्नी को स्योंनाई कहा जाता है। यह अपनी समस्या देवता को बताते हैं और देवता के सामने चावल के दाने (जिसे दाणी भी कहते) रखते हैं, देवता चावल के दानों को हाथ में लेकर उनकी समस्या के बारे में जान लेते हैं और उसकी समस्या का कारण तथा समाधान बताते हैं।

इनके अतिरिक्त स्योंकार के घर के अन्य सदस्य, सम्बन्धी, मित्रगण व गांव पड़ोस के लोग भी जागर में दर्शक की तरह शामिल होते हैं तथा देवता से आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

जागर के संचालन का मुख्य कार्य जगरिया करता है और वह अपने व सहयोगियों के गायन-वादन से जागर को निम्न आठ चरणों (भागों) में पूर्ण कराता है:-

1- प्रथम चरण - सांझवाली गायन (संध्या वंदन)।
2- दूसरा चरण- बिरत्वाई गायन (देवता की बिरुदावली गायन)
3- तीसरा चरण- औसाण (देवता के नृत्य करते समय का गायन व वादन)
4- चौथा चरण- हरिद्वार में गुरु की आरती करना।
5- पांचवा चरण- खाक रमना।
6- छठा चरण- दाणी का विचार करवाना।
7- सातवाँ चरण आशीर्वाद दिलाना, संकट हरण का उपाय बताना, विघ्न-बाधाओं को मिटाना।
8- आठवां चरण- देवता को अपने निवास स्थान कैलाश पर्वत और हिमालय को प्रस्थान कराना।

प्रथम चरण - सांझवाली गायन (संध्या वंदन)

जागर के प्रथम चरण में जगरिया हुड़के या ढोल-दमाऊं के वादन के साथ सांझवाली का वर्णन करता है, इस गायन में जगरिया सभी देवी-देवताओं का नाम, उनके निवास स्थानों का नाम और संध्या के समय सम्पूर्ण प्रकृति एवं दैवी कार्यों के स्वत: प्राकृतिक रूप से संचालन का वर्णन करता है। सांझवाली गायन बड़ा लम्बा होता है, जिसे जगरिया धीरे-धीरे गाते हुये पूर्ण करता है। जब जागर का प्रथम चरण, सांझवाली पूर्ण होता है, इसे जगरिया द्वारा हुड़के या ढोल-दमाऊं पर गाया जाता है।

द्वितीय चरण- बिरत्वाई

इस चरण में जिस देवता की जागर लगाई जाती है या जिस देवता का आह्वान किया जाता है, उस देवता की उत्पत्ति, जीवनी और उसके द्वारा किये गये उन महत्त्वपूर्ण कार्यों का विवरण जगरिया अपने गायन में करता है। जिसे बिर्त्वाई कहते हैं अगर हम बिर्त्वाई शब्द के मूल में जायें तो इसका अर्थ वीरता प्रतीत होता है, क्योंकि इसमें देवता की वीरता का बखान इस प्रकार किया जाता है कि उसे सामान्य स्तर के व्यक्ति से ऊपर उठाकर देवता बना दिया। इस प्रकार देवता को आह्वानित किया जाता है और जब बिरत्वाई अपने अंत पर पहुंचती है तो डंगरिया के शरीर

में कम्पन होने लगता है, इसका अर्थ है कि उसके शरीर में देवता का अवतरण हो शुरु हो गया है, अब जगरिया बिरुदावली को बंद कर औसाण देने लगता है।

तृतीय चरण- औसाण

इस समय तक डंगरिया के शरीर में देवता की आत्मा का प्रवेश हो चुका होता है तथा देवता को नाचने हेतु प्रेरित करने के लिए जगरिया औसाण देता है। औसाण देते समय हुड़के या अन्य वाद्य यंत्रों की गति बढ़ जाती है, औसाण के संगीत से मन्त्रमुग्ध होकर देवता अपने पूर्णरूप एवं शक्ति के साथ धूणी के चारों ओर नाचने लगता है। औसाण का हर शब्द देवता में जोश पैदा करता है, इस समय डंगरिया ऐसे ऐसे कार्य कर देता है, जो वह अपने एक साधारण मनुष्य के वास्तविक रूप में कभी भी नहीं कर सकता। इसी से यह महसूस होता है कि डंगरिया के शरीर में कोई दिव्य शक्ति या देवात्मा प्रवेश कर जाती है।

चौथा चरण- गुरु की आरती

इस चरण में देवता द्वारा गुरु की आरती की जाती है, ऐसा माना जाता है कि हमारे सभी देवी-देवता पवित्र आत्मायें हैं। गुरु गोरखनाथ इनके गुरु हैं और इन सभी देवताओं ने कभी न कभी हरिद्वार जाकर कनखल में गुरु गोरखनाथ जी से दीक्षा ली है। तभी इनको गुरुमुखी देवता कहा जाता है, इस प्रसंग का वर्णन जगरिया अपने गायन द्वारा देवता के समक्ष करता है। इस समय नृत्य करते समय देवता के हाथ में थाली दे दी जाती है और थाली में चावल के दाने, राख, फूल और जली हुई घी की बाती रख दी जाती है, देवता नृत्य करते हुये थाली पकड़कर अपने गुरुजी की आरती करते हैं।

पांचवा चरण- खाक या भिभूति (भभूत) रमाना

जागर के इस चरण में खाक रमाई जाती है, अपने गुरु की आरती के उपरान्त देवता द्वारा धूणी से राख निकाली जाती है। उसके बाद थाली में रखी हुई राख को देवता सबसे पहले अपने माथे पर लगाते हैं, उसके बाद जगरिया को फिर वाद्य यंत्रों पर राख लगाते हैं। इसके बाद वहां पर बैठे लोग क्रम से देवता के पास जाते हैं और देवता उनके माथे पर राख (भिभूत) लगाकर उनको आशीर्वाद देते हैं।

छठा चरण- दाणि का विचार-

सभी को भिभूति लगाने के बाद जागर के छठे चरण में देवता स्योंकार की दाणि का विचार करते हैं। दाणी का विचार से मतलब है, जिस घर में देवता का अवतरण किया गया है, उस घर की परेशानी का कारण क्या है? इसी बात पर देवता विचार करते हैं, वह हाथ में चावल के दाने (दाणी) लेकर विचार करते हैं और परेशानी का कारण और उसका समाधान भी बताते हैं।

सातवां चरण- आशीर्वाद देना-

स्योंकार-स्योंनाई की दाणी के विचार के बाद जागर के सातवें चरण में देवता स्योंकार-स्योंनाई को आश्वस्त करते हैं कि उन्होंने उनके सभी कष्टों को अभी से हर लिया है। उनकी जागर की सफल हुयी है तथा प्रसन्न होकर देवता द्वारा उनके सुखी पारिवारिक जीवन के लिये आशीर्वाद दिया जाता है। वहां पर बैठे सभी लोगों के लिये भी देवता मंगलकामना करते हुये उनको अशीर्वाद देते हैं।

आठवां चरण- देवता का अपने निवास के लिये प्रस्थान करना-

यह चरण जागर का अंतिम चरण होता है, क्योंकि जिस कार्य के लिये जागर लगाई गई थी वह कार्य पूरा हो जाता है। देवताओं को सूक्ष्मरूपधारी माना गया है और ऐसा माना जाता है कि सभी देवता हिमालय में निवास करते हैं। अत: जगरिया अब अंतिम औसाण (आश्वासन) देता है और देवता अंतिम बार नाचते हैं और नाचते हुये खुशी खुशी अपने धाम की ओर वापस चले जाते हैं। जगरिया से वह इस बात का वादा करते हैं कि जब भी स्योंकार-स्योंनाई पर संकट होगा, उसके निवारण हेतु वह जरुर आयेंगे। (पेटशाली, 2002, पृ0 58-68)[4]

उदाहरण स्वरूप जगरिया द्वारा कुमाऊँनी भाषा में गायई जानी वाली गंगनाथ देवता की जागर गायन के कुछ अंश-

स्वर राग दुर्गा पर अधारित-

ताल- दादरा

धा	धी	ना	धा	तू	ना
x			0		

यो उण्नी निशाण, अफताई आइ गेछ
भानवे ओ गंगुआ जोगी डोटी को निशाणा
भानवे ओ गंगुआ जोगी कालि को मसाणा ऽ ऽऽऽऽऽ

सं	सं	सं	ध	ध	-
यो	उण	नी	नि	शा	ऽ
x			0		
प	सं	सं	-	सां	ध
णा	ओ	उ	ण	नी	नि
x			0		
ध	-	ध	-	सं	सं
शा	ऽ	णा	ऽ	अ	फ

x			0		
सं	सं	ध	ध	प	प
ता	ई	आ	ई	गे	छ
x			0		
मप	ध	–	ध	प	–प
भान	वे	ऽ	ओ	गं	गुवा
x			0		
प	प	म	म	म	म
जो	गी	डो	टी	को	नि
x			0		
प	–	प	–	मप	ध
शा	ऽ	णा	ऽ	भान	वे
x			0		
म	प	–	–	–	–
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
x			0		

निष्कर्ष

देश के विभिन्न क्षेत्रों की तरह कुमाऊँनी लोक जीवन में भी आदिकाल से यह मान्यता है कि स्थानीय लोक-गाथाओं में देवी-देवताओं की पूजा करने से मन्नत पूरी होती है या विपत्ति हल हो जाती है। यहाँ जागर लगाते हुये जिस प्रकार देवता का आह्वान किया जाता है, इस प्रकार के अनुष्ठान विश्व भर में किसी न किसी समय प्रचलित रहे हैं। यहाँ समूचे कुमाऊँ में स्थान-स्थान पर स्थानीय देवी-देवताओं के थान (मंदिर) पाये जाते हैं। प्रत्येक गाँव व परिवार के अपने अलग-अलग देवी-देवताओं व उनके थान (मंदिर) भी होते हैं।

जागर का महत्त्व केवल देवी-देवता विशेष की जीवनगाथा का गान करके उसे अवतरित कराने तक ही परिसीमित न होकर इस उत्तराखण्ड प्रदेश के मध्यकालीन इतिहास एवं यहां की तत्कालीन सामाजिक स्थितियों, परिस्थितियों, जनमानस का लोक देवी देवताओं में अटूट विश्वास व अपार आस्था, प्रथा, परम्परा, समाज, संस्कार, धर्म, दुख-दर्द, रूढिवादिता, सामाजिक समस्याओं वास्तविक ज्ञान को समझने के लिए भी महत्त्वपर्ण हैं।

सन्दर्भ सूची -

1. पोखरिया, देव सिंह, 1994, लोक सस्कृति के विविध आयाम: मध्य हिमालय के संदर्भ में, श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा, पृ063।
2. पोखरिया, देव सिंह, 1994, कुमाऊँनी लोक साहित्य एवं कुमाऊँनी साहित्य, अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा, पृ068।
3. पोखरिया, देव सिंह, 1994, कुमाऊँनी लोक साहित्य एवं कुमाऊँनी साहित्य, अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा, पृ069।
4. पटेशाली, जुगल किशारे, 2002, उत्तराचंल के लोक वाद्य, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 58-68।
5. kumaouni Culture https://www.kumauni.in

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. उपाध्याय, उबार्दत्त, 1979, कुमाऊँनी लोक गाथाओं का साहित्यिक और सांस्कृतिक लोक अध्ययन, प्रकाश बुक डिपा, बरेली।
2. चातक, गोविन्द, 1990, भारतीय लोक -संस्कृति का संदर्भ : मध्य हिमालय, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. जोशी, प्रयाग, 1994, कुमाऊँनी लोकगाथाएँ, प्रकाश बुक डिपो, बरेली।
4. जोशी, प्रयाग, 1974, कुमाऊँनी लोकगाथाएँ, जुगल किशारे एण्ड कम्पनी, देहरादून।
5. जोशी, कृष्णानन्द, 1971, रमाले (कुमाऊँ की लोकगाथा), प्रकाश बुक डिपो, बरेली।
6. नोटियाल, शिवानन्द, उत्तराखण्ड की लोक गाथाएँ, अल्मोडा़ बुक डिपो, अल्मोडा।
7. पाण्डे, बी0डी0, 1990, कुमाऊँ का इतिहास, श्याम प्रकाशन, अल्मोड़ा।
8. पाण्डे, त्रिलाचेन, 1979, कुमाऊँ का लोक साहित्य, अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा
9. पटेशाली, जुगल किशारे, 2002, उत्तराचंल के लोक वाद्य, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. पटेशाली, जुगल किशारे, 2005, कुमाऊँ की लोकगाथाएँ, उत्तरांचल लोक-कला एवं साहित्य संरक्षण समिति चितई प्रकाशन, अल्मोड़ा।
11. पोखरिया, देव सिंह, 2000, कुमाऊँनी संस्कृति, अल्मोडा बुक डिपो, अल्मोड़ा।
12. पोखरिया, देव सिंह, 1994, कुमाऊँनी लोक साहित्य और कुमाऊँनी साहित्य, अल्मोडा बुक डिपो, अल्मोड़ा।
13. पंत, माहेन चन्द्र, 1993, कुमाऊँनी लोक गाथाओं का इतिहास, ग्रंथायन सर्वोदय नगर, अलीगढ़।
14. भट्ट, मदन, 2002, कुमाऊँ की जागर कथायें, श्री साईं प्रिंटर्स, हल्द्वानी।
15. मटियानी, शैलेश, 1958, कुमाऊँ की लोक कथायें, आत्मा राम एण्ड संन्स, नई दिल्ली।
16. शर्मा, डी0डी0, 2006, उत्तराखण्ड के लोकदेवता, अंकित प्रकाशन, हल्द्वानी।
17. साह, ईला, 2010, कुमाऊँनी लोकगीतों का समाजशास्त्रीय अध्ययन, अंकित प्रकाशन, हल्द्वानी।
18. अधिकारी, पूरन सिंह, 2006 मौखिक परम्पराओं में प्रतिबिम्बित सामाजिक व आर्थिक जीवन: एक एतिहासिक अध्ययन, अंकित प्रकाशन, हल्द्वानी।